Raga of the Month March 2026

Raga Bhatiyar राग भटियार

भटियार, भटिहार, भटियारी, भटियाली आदि नामोंसे सम्बोधित किया जाने वाला यह एक प्राचीन राग है। ऐसी जन श्रुति है की यह राग राजा भर्तृहरि निर्मित है। यद्यपि इस राग में परिवर्तन होता आया है, उसका प्रचलित स्वरूप इस प्रकार है।

कोमल रिषभ, दोनों मध्यम, पंचम और ग,ध,नि शुद्ध। वादी शुद्ध मध्यम और संवादी षडज सर्वमान्य है। गान समय रात्रि का अंतिम प्रहर है। यह एक संधि-प्रकाश राग है और एक परमेल प्रवेशक राग भी है, जो मारवा थाटसे शुद्ध रिषभ - धैवत वर्ग के बिलावल आदि थाटों के रागों का समय आरंभ होना सूचित करता है। अवरोहमे वक्र संचार होने के कारन इस रागमे मांड अंग दीखता है।

आचार्य श्री ना. रातंजनकरजी के "संगीत परिभाषा विवेचन" इस किताब में राग भटियार का चलन इस प्रकार दिया है।

सा , साध, ध प, मं ध सां, रें नि, ध ध नि प. ->म, प ग, ध मं ग, प ग, रे सा, सा ;
सा ,साध , मं ध सां, रें रें सां, नि रें गं , रें सां, सां, सां नि ध , नि प, ध म, प ग , म ध, ध मं ग, प, ग, रे सा।

आजके ऑडिओमें हम पहले पंडित के जी गिंडेजी ने प्रस्तुत किया हुआ लेक्चर डेमोंस्ट्रेशन का अंश सुनेंगे, फिर उन्हींसे गुरू आचार्य रातंजनकरजी के द्वारा रचा हुआ विलम्बित ख्याल “कहियो ब्रिजराज” सुनेंगे, उसके पश्चात सुश्री डॉ. वरदा गोडबोले जी ने गायी हुई तीन रचनाएँ सुनेंगे- पंडित यशवंत महालेजी रचित “शारदा सरस्वती वंदना”, तराना और पंडित गोविंद नारायण नातू रचित छोटा ख्याल “दिन गये बीत” और अन्तमे पंडित के जी गिंडेजी से आचार्य रातंजनकरजी का छोटा ख्याल “तनिक सुन री” सुनेंगे।

आभार - पंडित यशवंत महाले, सुश्री डॉ. वरदा गोडबोले.

01-03 -2026.

Link to the list of 180+ “Raga of the month” articles

@ Archive of ROTM Articles https://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx